REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 6 | MARCH - 2022

नागार्जुन के साहित्य में आंचलिक तत्व

अल्पना मिश्रा
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

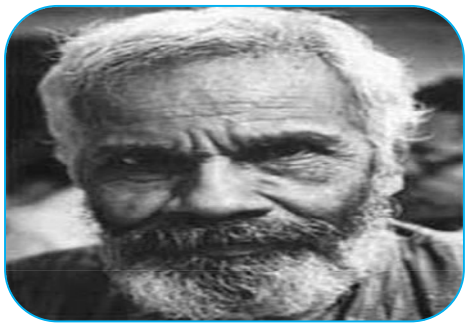

नागार्जुन जनवादी कथाकार है, तथा एक जनकवि के रूप में प्रतिष्ठित है। उनके समूचे साहित्य में आंचलिक तत्वों का सृजन हुआ है जिससे आंचलिकता का वातावरण उनकी साहित्य भूमि को गौरवान्वित करने के साथ ही उसे प्रभावशाली व सशक्त भी बनाता है। कोई भी साहित्यकार अपने चारों ओर फैले हुए समसमायिक वातारण से अछूता नहीं रह सकता। वह जिस वातवरण में रहता है उसकी सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक आदि परिस्थितियों प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उसके मनोभाव को प्रभावित करती है। जब कोई क्रांतिकारी लहर देश में उठती है तो साहित्यकार के लिये उससे अविचलित रहना असंभव सा हो जाता है और उसकी विशाल आत्मा देशबन्धुओं के कष्टों से विकल हो उठती है तथा उस तीव्र लहर से वह अपनी लेखनी से वह व्यापक दृष्टि डालता है। नागार्जुन पर भी समाज और देश की विभिन्न परिस्थितियों का गहरा प्रभाव पड़ा जिसकी प्रतिच्छाया हमें उनके विशाल साहित्य भण्डार में देखने को मिलती है। स्वाधीनता के लिए किए जा रहे विभिन्न प्रयासों और गांधी जी के नेतृत्व में हो रहे अहिंसक आन्दोलन से जनता में जाग्रति उत्पन्न हो रही थी।

प्रस्तावना –

नागार्जुन के पूर्वज बिहार के दरभंगा जिलान्तगत ग्राम तरौनी के वत्स गोत्रीय मैथिल ब्राम्हण थे। नागर्जुन के पिता गोकुल मिश्र गांव में खेती–बाड़ी का कार्य करते थे, नागार्जुन की माता श्रीमती उमादेवी एक सीधी–सादी ग्रामीण गृहणी महिला थी। नागार्जुन का जन्म 1911 ई. में ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को हुआ था। इनके बचपन का नाम वैद्यनाथ मिश्र था। चार वर्ष की अबोधा अवस्था में ही इनकी मां का स्नेहमयी आंचल इनके जीवन से हट गया। बालक जीवन में यह मातृ वियोग का वज्र उनके कोमल हृदय में बड़ा अघात था। नागर्जुन के पिता श्री गोकुल मिश्र की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। लेकिन वे अपने पुत्र को विद्वान बनाने का दृढ़ संकल्प थे। वे अंग्रेजी स्कूल में पढ़ा सकने में विवश थे अतः संस्कृत की पाठशाला में वैद्यनाथ को प्रवेश दिलाया। वैद्यनाथ ने गांव से ही प्रथम की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली, इसके पश्चात् गोनौली के संस्कृत विद्यालय से व्याकरण–मध्यम की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। चार साल काशी में विध्याध्ययन करने के बाद वे कलकत्ता में पढ़ने गये। संस्कृत अध्ययन साहित्य शास्त्र में आचार्य तक हुआ। बालक वैद्यनाथ (नागार्जुन) के कोमल मर्म को चार वर्ष की अल्पावस्था में मातृ वियोग के पश्चात् सामाजिक और पारिवारिक विषमताओं, रूढ़ियों तथा आडम्बरों ने बुरी तरह से आहत किया था। गांव में विद्याध्ययन करते समय भी उन्हें सामाजिक जीवन कठोर अनुभव हुए थे। निम्न जातियों के बालकों के प्रति उच्च वर्ग की अवहेलना असहनीय थी। नगार्जुन का विवाह अपराजिता देवी के साथ हुआ। उस समय वह कलकत्ता में विद्याध्ययन कर रहे थे।

बौद्ध धर्म के प्रति नागार्जुन का अभिरूचि छात्र जीवन से ही थी। उन्होंने पालि के अनुदित ग्रंथों का परायण लगन के साथ किया। भारत में भ्रमण करते समय उनका परिचय जैन मुनियों से भी हुआ। इस सम्पर्क ने उन्हें प्राकृत भाषा सीखने के बाध्य किया। लंका में रहते हुए भिक्षु नागार्जुन वामपंथी नेताओं के वातावरण में भी रहे। भारत लौटने पर उन्होंने जनमानस में होते हुए तीव्र परिवर्तन तथा दलित वर्ग के उत्पीड़न को भी महसूस किया जिसक प्रभाव उनके साहित्य पर परिलक्षित होता है। उस समय किसान–मजदूर वर्ग पीडित और शोषित थे। नागार्जुन स्वयं एक निर्धन कृषक परिवार की संतान थे वह अपनी सहज साहानुभूति और आत्मप्रेरणा से किसान तथा मजदूरों के समर्थन में मार्क्सवाद की ओर प्रवृत हुए। यहाँ तक कि क्रांतिकारी आवाज उठाने के कारण वे जेल की यातना भी सहे।

विश्लेषण –

हिंदी के आधुनिक रचनाकारों में नागार्जुन सर्वाधिक सम्मानित लेखक थे। वे हिन्दी, बंगाल और मेथिली तीनों भाषाओं के सम्मनित रचनाकार थे। नागार्जुन को साहित्य अकादमी पुरूस्कार, भारत भारती पुरस्कार आदि से सम्मनित किया गया। नागार्जुन ने अपने कवि कर्म का प्रारंभ मैथिली और संस्कृत में काव्य रचना से किया था। नागार्जुन की लेखनी पद्य एवं गद्य दोनों ही विधाओं पर चली है। बाबा नागार्जुन हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि है। हिन्दी कथा और साहित्य की प्रगतिशील व यथार्थवादी धारा के प्रमुख उपन्यासकार के रूप में नागार्जुन का नाम अग्रगण्य है। हिन्दी कथा साहित्य की सार्थक परम्परा में नागार्जन अविस्मरणी हस्ताक्षर हैं, और बहुजन हिन्दी समाज पर उनके व्यक्तित्व का व्यापक प्रभाव है। उनके सम्पूर्ण लेखन का तेवर जनवादी है। स्वयं अभावों और विसंगतियों से जूझकर वे एक अनुभवपुष्ट जनकवि और आंचलिक कथा शिल्पी की हैसियत से आज प्रतिष्ठापित है। नागार्जुन जी ने आंचलिक उपन्यास कारों में अपना विशेष स्थान बनाया है। इन्होंने बहुचर्चित कहानियां भी लिखी है। नागार्जुन के साहित्य में उनके यायावरी व्यक्तित्व का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। फलतः नागार्जुन जनवादी चेतना के कवि है। उनकी सृजनात्कता क्षमता का मूल उद्देश्य देश की जनता को जागृत करना है। नागार्जुन जमीन के कवि है, उपन्यासकार है, उन्हें अपने भारत और भारतीय जनों से निश्छल छद्महीन प्रेम है। नागार्जुन जी की क्रांतिकारी आस्था, सजग वर्ग दृष्टिकोण और सहज अनुभव, विवेक उन्हें भारतीय जनता का राष्ट्र लेखक बनाते हैं।

नागार्जुन आधुनिक साहित्य धारा के संशक्त मानवतावादी शोषणविरोधी कलमकार हैं, जिन्होंने जीवन पर्यंत संघर्ष किया। समसामयिक राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों ने उनके विचारों को गतिशील किया। राष्ट्र और समाज के कर्णधार युवा पीढ़ी, भ्रष्टाचार, युद्ध, शोषण आदि से त्रस्त हो रही थी एवं उन्मुक्त वायु में सांस लेने के लिए मजदूर, दलित, शोषित जनता बेचैन हो रही थी। समसामयिक वातावरण में ग्रामीण जनता अनेकनेक समस्याओं से ग्रसित थी। इन्हीं सब परिस्थितियों का प्रभावा नागार्जुन समाज के चितेरे लेखक एवं कावि के मानस पटल पर पड़ा। जिससे ग्रामीण समुदाय और समाज उनके साहित्य का आधार बनें और आंचालिकता की स्पष्ट छाप उनके साहित्य में पड़ी। यहाँ पर नागार्जुन से साहित्य में आंचलिक तत्व का मूल्यांकन हम कविता, उपन्यास एवं कहानी सभी के आधार पर करेंगें।

नागार्जुन की कविताओं में आंचलिकता :

नागार्जुन प्रगतिवादी काव्यधारा के सशक्त कवि है। प्रगतिवादी साहित्य ने वर्गहीन समाज की स्थापना पर बल दिया है। प्रगतिवाद में प्रगतिशीलता के तत्व निहित है नागार्जुन प्रारंभ से ही जनवादी भावना से युक्त थे। संघर्षशील कवियों में जो स्थान निराला का था वही स्थान आज नागार्जुन के समस्त कवित्व पूर्ण साहित्य में उनके विद्रोही स्वर की छाप पड़ी है। नागार्जुन जनवादी कवि होने कारण लोकसभा को ही आवश्यक मानते है। जनकवि समाज का सजग चेता और प्रहरी होता है। बाल्यावस्था से जिस मिट्टी में लथपथ होकर वह खेलता है, पालित–पोषित होता है, मनुष्य उसी से सूक्ष्म और स्थूल की रचना करता है। किसी भी रचनाकार की मानसिकता तथा उसके विचारों पर उस समय की सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक आदित परिस्थितियों का प्रभाव अवश्य की पड़ता है इन प्रभावों और परिवेश के बिना सृजनात्मकता व्यक्तित्व संभव ही नहीं। नागार्जुन ग्रामीण परिवेश से भावनात्मक रूप से जुड़े हुये कवि हैं तभी तो उन्हें उनका गांव बार–बार याद आता हैं और गांव का वर्णन वे नाना रूपों में करते है।

''याइ आता है मुझे वह अपना तरउनी ग्राम
याद आती है लीचियां, वे आम,
याद आते मुझे मिथिला के रूचिर भू–भाग,
याद आते धन–धान,
याद आते कमल कुमुदनि और तालमाखन।।
याद आते शस्य श्यामल जनदों के।
रूपगुण अनुसार ही रखे गये वे नाम।
याद आते वेणुवन वे नीलिमा के निलय अति अभिराम।''

कवि नागार्जुन कहते हैं कि मुझ मेरा तरउनी ग्राम याद आता है, उस गांव में आम के पेड़, लीचिया और कमल कुमुदिनी का खिलना भी मुझे याद आता है। गांव का प्रत्येक वातारण मुझे प्रभावित किये हुए है। उस गांव की सुंदर अनुपम छटा को कवि ने आंचलिक वातारण को पृष्ठभूमि में चित्रित किया है। नागार्जुन जनता के कवि है उन्होंने समाज को अपने ढंग प्रस्तुत करते हैं। संघर्ष, शोषण, धार्मिक, मिथ्याडम्बर, रूढ़ियों, पूंजीपतियों के प्रति आक्रोश मानव के करूण गान, उनके दर्द की अभिव्यक्ति, सर्वहारा से आत्मीयता का भाव आदि नागार्जुन की सामजिक चेतना के मानदण्ड है। नागार्जुन ने समाज की बिखरी हुई शक्तियों को एकत्र करके उसे एकतामूलक सूत्र में बांधने की मूल्यवान कोशिश भी की है। नागार्जुन की आंचलिक रचना सर्वग्राह्य है। सामाजिक चेतना का इतना विराट भाव फक्कड़ कबीर के अलावा और कहीं दुर्लभ है तो केवल नागार्जु के साहित्य में। नारी के दर्द, उत्पीड़न की बड़ी मार्मिक व्यथा अपनी रचना में कवि प्रस्तुत की है। उदारण दृष्टता है –

''हृदय में पीड़ा दृगों में लिये पानी
देखते पथ काट दी सारी जवानी
मात्र मेरी भावना ही रात दिन थी
देवि, तेरी साधना कितनी कठिन थी
निठुर मैंने तुम्हारी बलि चढ़ा दी
क्योंकि आकांक्षा बहुत अपनी बढ़ा ली
पर असम्भव था व्यवस्था का भार ढोना
भूल जाना तुम्हें और निश्चित होना''।।

समाज मे विधवा नारी की असाध्य जीवन साधना को कवि नागार्जुन ने बड़े ही मर्मस्पर्शी भावों में व्यक्त किया है। गांवों की जनता व समाज का एक अन्य उदाहरण दृष्टव्य है–

''धन्य वे जन वह धन्य समाज
यही भी तो हूँ न मैं असहाय।
यहां भी है व्यक्ति समुदाय किन्तु
जीवन भर रहूँ फिर भी प्रवासी ही कहेंगें हाय''।।

नागार्जुन के जीवन की शुरूआत ही अभाव के प्रांगण में हुई। उन्होनें अभाव और शोषण को नजदीक से देखा था। नागार्जुन किसी भी प्रकार का शोषण बर्दाश्त नहीं करते, उन्होंने शोषितों का पक्ष लिया है। शोषित वर्ग के लिये नागार्जुन निरंतर संघर्षशील थे। नागार्जुन जनता के त्रासों, आघातों के कारणों को पहचानने वाले अपने युग के प्रासंगिक कवि हैं। गांव के खेतिहर किसानों तथा मजदूरों के प्रति उनकी उदात्त भावना दृष्टव्य है–

''सेठ और जमींदार को नहीं मिलेगी एक छदाम
खेत–खान, दुकान, मिलें सरकार करेंगी तखल तमाम
खेत मजदूरों और किसानों में बंट जायेगी
नहीं किसी कमकर के सिर पर मड़रायेगी
नौकरशाही का यह रद्दी ढांचा होगा चूरम–चूर
सुजला–सुफला के गायेंगे, गीत प्रसन्न किसान मजदूर''।।

नागार्जुन की आवाज शोषितों की पक्षधरता की आवाज है। शोषित वर्ग में मजदूर किसान आदि सर्वहारा वर्ग ही हमारे देश की नींव के पत्थर है। वास्तव में हमारे देश का सहारा भार इन्हीं मेहनतकशों की हड्डियों पर खड़ा है फिर भी इनको इज्जत की जिन्दगी पोषक समाज द्वारा जीने नहीं दिया जाता हैं ये किसान मजदूर वर्ग दर बदर की ठोकरे खाते हैं। इनको अपमान तथा घृणा की नजर से देखा जाता है। आजादी के बाद पूंजीपति वर्ग एक विशाल वर्ग बन गया है। इसी वर्ग ने मजदूरो और के खेतिहर किसानों का बेहिसाब शोषण किया है। इनसे जी तोड़ मेहनत का काम लिया जाता था। और उनके बदले उन्हें मेहनत का आधा हिस्सा भी नसीब नहीं होता। गांवों में किसानों का शोषण जमींदार वर्ग करता था। नागार्जुन गांव के किसानों मजदूरों के प्रति अपनी हृदयात्मक संवेदना प्रस्तुत करते हुये शोषण और अत्याचार के खिलाफ बुलन्द आवाज उठाते है। किसानों–मजदूरों की वास्तविक परिस्थितियों का चित्रण कवि आंचलिकता के आधार पर करते हैं तथा उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने का प्रयास भी करते हैं। देश की समस्त किसान, दलित और श्रमिक जनता जो कि आंचलिक जीवन यापन कर अपना निर्वाह दीनहीन स्थिति में करती है, वह नागार्जुन की कविताओं में चित्रित है। उदाहरण प्रस्तुत है –

''लाख–लाख श्रमिकों की गर्दन कौन रहा है रेत
छीन चुका है कौन करोड़ों खेतिहारों के खेत
किसके बल पर कूद रहे हैं सत्ताधारी प्रेत
बलिहारी कागजी खुशी भी क्यों न बजायें बीन
अश्वमेघ का घोड़ा निकला चित्त है चारों नाल
कौन कहेगा आजादी के बीते तेरह साल''?

नागार्जुन ने पाषाणी कविता के माध्यम से समाज में जीवन यापन करने वाली नारी की दीन हीन स्थिति का चित्रण भी किया है। उन्होंने इस कविता में भक्तिभाव की अपेक्षा मानवीय अनुभूतियों को व्यक्त किया है। नागार्जुन समकालीन आंचलिक नारी का चित्रण कर उसकी परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण किया है जिससे आंचलिकता उनके काव्य में उभकर सामने आयी है। नागार्जुन नारी को समाज में उचित स्थान दिलाना चाहते थे वह नारी का सम्मान चाहते थे इसीलिये वे राम के माध्यम से यह कहते हैं कि–

''नारी के प्रति कभी न होगा क्रूर
नहीं करेगा वह दूसरा विवाह
सदा रहेगा एक पत्नीव्रत शील''।

नागार्जुन अनमेल विवाह, बाल विवाह जैसी समस्या से नारी को मुक्त करना चाहते हैं–

''धन्य–धन्य हो उठी चन्दना उस दिन
सारे जन समाज में .....
कर दिया घोषित धनवाह ने मुक्त उसे
सौंप दिये अधिकार विशाल धन जन के
बना दी अधिस्वामी''।।

गरीबी और दरिंदगी भरी जिंदगी को शायद नागार्जुन में यथार्थ में अनुभव किया था यहीं कारण है कि उनकी कहानी असमर्थदाता में गरीबी का जो प्रतिबिम्बांकन किया गया है वह कोई अन्य नहीं कर सकता। झोपड़ी में जीवन यापन करने वाली गरीब चौदह वर्षीय लड़की भीख मांगने के लिये मजबूर है। लेखक ने बडें ही मार्मिक अवस्था में उस भीख मांगने वाली लड़की की परिस्थितियों का चित्रांकन किया है। गरीबी और भुखमरी का ज्वलंत उदाहरण इस असमर्थदाता कहानी ने प्रस्तुत किया गया है। लेखक गांव की गरीब महिला की मजबूरी को भी चित्रांकित करते हैं, उसके घर का विवरण ही उस नारी की यथास्थिति का अवलोकन करा देते हैं। दीनहीन दशा में भीख मांग कर अपने मां की भूख और स्वयं की भूख शांत करने वाली छोटी सी बालिका का चित्रण यहां कहानी में बढ़ा ही मर्मस्पर्शी है।

निष्कर्ष –

इस प्रकार नगार्जुन की कविता, कहानी और उपन्यासों के तात्विक विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि, नागार्जुन एक सशक्त आंचलिक कथाकार है, साथ ही सामाजिक, राजनीतिक, चेतना के सूक्ष्म विश्लेषण व विवेचक भी है। लेखक ने मिथिलांचल के ग्रामों, यहां के निवासियों, लोक जीवन और उभरती हुई राजनीतिक, सामाजिक चेतना का ज्वलंत रूप प्रस्तुत किया है। नागार्जुन आंचलिक तत्वों की प्रवृति को अपनाकर अपने लेखकीय संरचना में दलित, शोषित समाज और सर्वरारा वर्ग के पक्षधर हैं। उन्होंने सामंती प्रवृतियों, जमींदारों और पूंजीवादी के शोषक चरित्रों पर कुठारघात किया है। वामपंथी दलों के प्रति उनका स्वाभाविक झुकाव है। वर्ग भेद, वर्ग वैषम्य, को व समाज व राष्ट्र के लिए हानिकारक तो मानते ही हैं, साथ ही वे समाज में सामाजिक एकता व समानता का सूत्रपात भी करते हैं। समाज में विभिन्न समस्याओं को लेकर संघर्ष और विध्वंश के स्थान पर वे समाज के पुननिर्माण और नवनिर्माण की भावना को प्राथमिकता प्रदान करते हैं। युवा पीढ़ी के माध्यम से नागार्जुन नये समाज का आदर्शवादी रूप सुजित करना चाहते हैं। नागार्जुन का समकालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक रूप उनके सृजन में उभरकर पाठक के समक्ष प्रस्तुत हुआ है। नागार्जुन अपनी इन आंचलिक कृतियों के माध्यम से समाज में परिवर्तन व सुधार की आशा रखते हैं।

संदर्भ –

1. नागार्जुन, गरीबदास, पृष्ठ 36
2. नागार्जुन, बाबा बटेसर नाथ, पृष्ठ 161
3. नागार्जुन, जमनिया का बाबा, पृष्ठ 229
4. नागार्जुन, दुखमोचन, पृष्ठ 314
5. नागार्जुन, बाबा बटेसर नाथ, पृष्ठ 219